International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709
Received: 27-02-2026, Accepted: 30-03-2026, Published: 14-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 39-41

पारिवारिक भूमिकाएं एवं उसका बदलता स्वरूप गरियाबंद जिले के संदर्भ में एक अध्ययन

डॉ. राजेश कुमार बघेल
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय राजीव लोचन स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजिम, जिला गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
भारत जैसे देश में परिवार एक आधारभूत सामाजिक संस्था के रूप में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, यह व्यक्ति के संपूर्ण जीवन तक उसके संस्कृति, नैतिक व सामाजिक विकास को एक दिशा प्रदान करता है। परिवार न केवल समाजीकरण का मध्यम है, ब्लकि यह हमारी संस्कृति व परंपरा के संरक्षण, सामाजिक नियंत्रण तथा व्यक्तियों को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करने का भी प्रमुख आधार रहा है। यदि हम छत्तीसगढ़ के संदर्भ में देखें तो यहां के ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में परिवार की भूमिका बहुत ही प्रभावशाली और अधिक व्यापक रही है। गरियाबंद जिले में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचलन रहा है, जिसमें प्रत्येक सदस्यों की भूमिकाएं स्पष्ट रूप से निर्धारित होती थी और परिवार के सदस्यों के बीच सहयोग व परस्पर निर्भरता की भावना मुख्य रूप से देखने को मिलती थी। परंतु वर्तमान में वैश्वीकरण के प्रभाव, औद्योगिकरण, नगरीकरण, संचार एवं यातायात का विकास तथा शिक्षा के प्रसार जैसे कारकों की वजह से पारिवारिक संरचना एवं भूमिकाओं में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं। अब संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या लगातार बढ़ रही है। महिलाओं में शिक्षा का प्रसार होने से सामाजिक एवं आर्थिक भूमिका में विस्तार हुआ है, तथा युवाओं में स्वतंत्रता बढ़ी है और स्वयं निर्णय लेने की प्रवृत्ति विकसित हुई है। इसके साथ ही साथ पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन, पीढ़ीगत अंतराल तथा परिवार के बुजुर्गों की भूमिका में कमी जैसी प्रवृत्तियां हमें दिखाई दे रही है। गरियाबंद जिले में परिवारों के बीच हमें परंपरा और आधुनिकता के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिसके कारण गरियाबंद जिले के संदर्भ में इन परिवर्तनों का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य परिवार की भूमिकाओं के पारंपरिक स्वरूप का विश्लेषण करते हुए वर्तमान में बदलते आयाम का अध्ययन करना, और इन परिवर्तनों के कारण होने वाले विभिन्न प्रभावों को समझना है, ताकि वर्तमान समाज में परिवार की बदलती हुई प्रकृति का समग्र विश्लेषण किया जा सके।

मूल शब्द: पारिवारिक संरचना, पारिवारिक भूमिकाएँ, सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, ग्रामीण समाज

समाज की मूलभूत इकाई के रूप में परिवार का एक विशेष महत्व रहा है। परिवार में विभिन्न सदस्यों की अपनी–अपनी भूमिका निर्धारित होती है व इससे मिलकर सामाजिक संरचना का निर्माण होता है। परंपरागत रूप से यदि हम देखें तो परिवार में बुजुर्ग, पुरुष, महिला, एवं बच्चों की भूमिकाएं स्पष्ट रूप से परिभाषित हुआ करती थी। जिसका पालन सामाजिक मान्यताओं एवं संस्कृति व परंपराओं के अनुरूप किया जाता था। परंतु वर्तमान समय में विभिन्न कारकों जैसे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों से परिवार की भूमिकाओं में विभिन्न परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। गरियाबंद जिले के संदर्भ में यदि हम देखें तो यह परिवर्तन हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहां एक ओर परंपरागत ग्रामीण संरचना अभी भी बनी हुई है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा के प्रसार, रोजगार के नए अवसरों का, सृजन तकनीकी विकास, नगरीकरण आदि ने परिवार की संरचना और कार्य को प्रभावित किया है।

विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका संयुक्त परिवार से एकल परिवार में परिवर्तन तथा पीढ़ियों के बीच बदलते संबंध इस परिवर्तन के प्रमुख संकेतक है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य गरियाबंद जिले में पारिवारिक भूमिकाओं के परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन करना है, तथा यह समझना है कि यह परिवर्तन सामाजिक जीवन को कैसे प्रभावित कर रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य गरियाबंद जिले मैं परंपरागत परिवार की संरचना वी भूमिकाओं का अध्ययन करना वर्तमान समय में हो रहे परिवर्तन का अध्ययन करना, महिलाओं की पारिवारिक निर्णय में भूमिका तथा पीढ़ियों के बीच संबंधों का अध्ययन करना है।

साहित्य समीक्षा

1. M N Srinivas (1966) नें अपने अध्ययन में यह बताया कि संस्कृतिकरण व पश्चिमीकरण के माध्यम से पारिवारिक संरचना एवं भूमिकाओं में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया जा सकता है। उनके अनुसार आधुनिकता के प्रभाव से परंपरागत भूमिकाएं परिवर्तित हो रही है।
2. Leela Dube (1997) ने महिलाओं की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हुए यह बतलाया कि आधुनिक शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता होने के कारण उनकी भूमिका में व्यापक परिवर्तन आया है।
3. A M Shah (1998) ने अपने अध्ययन में यह बताया कि भारत में संयुक्त परिवार का पूर्ण रूप से विघटन नहीं हुआ है, बल्कि उनमें संरचनात्मक परिवर्तन हुआ है। उन्होंने यह बताया की भूमिकाओं का पुनर्वितरण हो रहा है।
4. Patricia Uberoi (2006) ने परिवार संबंधी अपने अध्ययनों में यह स्पष्ट किया कि वैश्वीकरण, आधुनिक शिक्षा व मीडिया के प्रभाव के कारण पारिवारिक संबंधों एवं भूमिकाओं में परिवर्तन देखने को मिल रहा है।
5. Iravati karve (1961) नें भारतीय परिवार की संरचना का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि पारिवारिक भूमिकाएं विभिन्न जाति, क्षेत्र व संस्कृति के अनुसार अलग–अलग होती है। किंतु आधुनिकीकरण के कारण इनमें सामान्य देखने को मिल रही है।

शोध पद्धति

इस शोध अध्ययन में पारिवारिक भूमिकाएं एवं उसका बदलता स्वरूप विषय का विश्लेषण करने के लिए एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों प्रकार के डेटा का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रहण गरियाबंद

जिले के राजिम तहसील के नगर पालिका क्षेत्र राजिम से किया गया है। जिसमें 100 व्यक्तियों का चयन डाटा संग्रहण हेतु किया गया है। इन व्यक्तियों में विभिन्न आयु, वर्ग, लिंग एवं सामाजिक पृष्ठभूमि के लोग शामिल है। उत्तरदाताओं का चयन सुविधा एवं उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के आधार पर किया गया है। डाटा संग्रहण के लिए संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया है, जिससे पारिवारिक भूमिका एवं लोगों के बीच संबंधों में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सके। द्वितीयक डेटा के अंतर्गत विभिन्न शोध पत्रों, इंटरनेट स्रोतों तथा विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकी एवं गुणात्मक विधियों के माध्यम से किया गया है, ताकि शोध के उद्देश्यों के अनुरूप निष्कर्ष निकाला जा सके।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: परिवार का प्रकार

क्र.	प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1	संयुक्त	37	37:
2	एकल	63	63:
योग		100	100:

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि 100 परिवारों में से 37: परिवार संयुक्त परिवार की श्रेणी में है, व 63: परिवार एकल परिवार की श्रेणी में आते हैं। इससे स्पष्ट है कि एकल परिवारों की संख्या अधिक है, जो आधुनिक प्रवृत्ति को दर्शाता है।

तालिका 2: परिवार का प्रकार

क्र.	आकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1	विस्तृत	18	18:
2	मध्यम	57	57:
3	नाभिक	25	25:
योग		100	100:

उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि 100 परिवारों में से 18: विस्तृत परिवार, 57: मध्यम परिवार व 25: नाभिक परिवार की श्रेणी में है। स्पष्ट है कि मध्य परिवारों की संख्या अधिक है जो बदलते हुए पारिवारिक संरचना को दर्शाता है।

तालिका 3: परिवार का मुखिया कौन है?

क्र.	मुखिया	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पुरूष	52	52:
2	महिला	11	11:
3	दोनों	37	37:
योग		100	100:

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि 52: परिवारों में परिवार का मुखिया पुरुष है, 11: परिवारों में मुखिया महिला है, तथा 37: परिवारों में महिला व पुरुष दोनों परिवार के मुखिया की भूमिका निभाते हैं, जो बदलते हुए स्वरूप को स्पष्ट करता है। परंतु पुरुष प्रधानता अभी भी अधिक है।

तालिका 4: पारिवारिक मामलों में निर्णय कौन लेता है?

क्र.	निर्णय लेना	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पुरूष	43	43:
2	महिला	17	17:
3	दोनों	40	40:
योग		100	100:

तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि 43: परिवारों में पुरुष, 17: परिवारों में महिलाएं व 40: परिवारों में दोनों पारिवारिक मामले में निर्णय लेते हैं। स्पष्ट है कि संयुक्त रूप से निर्णय लेने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

तालिका 5: पारिवारिक निर्णयों में बच्चों की भागीदारी होती है या नहीं?

क्र.	बच्चों की भूमिका	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	22	22:
2	नहीं	48	48:
3	कभी–कभी	30	30:
योग		100	100:

तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक मामलों में निर्णय लेते समय 22: परिवारों में बच्चों की भागीदारी होती है, 48: परिवारों में बच्चों के भागीदारी नहीं होती, व 30: परिवारों में कभी–कभी बच्चों की भागीदारी होती है। तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि पारिवारिक निर्णय में बच्चों की भागीदारी बढ़ रही है।

तालिका 6: पारिवारिक भूमिकाओं में परिवर्तन के लिए रोजगार की भूमिका

क्र.	रोजगार का प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	74	74:
2	नहीं	26	26:
योग		100	100:

तालिका क्रमांक 6 से स्पष्ट है कि पारिवारिक भूमिकाओं में परिवर्तन के लिए 74:परिवारों ने रोजगार के प्रभाव को स्वीकार किया है, तथा 26: परिवारों ने स्वीकार नहीं किया है। इससे स्पष्ट है कि पारिवारिक भूमिकाओं में परिवर्तन के लिए रोजगार एक प्रमुख कारक है।

तालिका 7: भूमिका में परिवर्तन के लिए शिक्षा की भूमिका

क्र.	शिक्षा की भूमिका	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	82	82:
2	नहीं	18	18:
योग		100	100:

उपरोक्त तालिका क्रमांक 7 से स्पष्ट है कि 82: परिवारों में भूमिका में परिवर्तन के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है, तथा 18: परिवारों में शिक्षा महत्वपूर्ण कारक नहीं है। अतः स्पष्ट है कि पारिवारिक भूमिका में परिवर्तन के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है।

तालिका 8: क्या बुजुर्गो की भूमिका में परिवर्तन आया है?

क्र.	बुजुर्गो की भूमिका	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	58	58:
2	नहीं	42	42:
योग		100	100:

उपरोक्त तालिका क्रमांक 8 से स्पष्ट होता है कि 58: परिवारों में पारिवारिक मामलों में बुजुर्गों की भूमिका होती है, तथा 42: परिवारों में पारिवारिक मामलों में बुजुर्गों की भूमिका नहीं होती। स्पष्ट है कि समय के साथ बुजुर्गों की भूमिका में कमी आती जा रही है।

तालिका 9: क्या पारंपरिक मूल्य कमजोर हो रहे है?

क्र.	मूल्यों का पालन	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	77	77:
2	नहीं	23	23:
योग		100	100:

तालिका क्रमांक 9 से स्पष्ट है कि 70ः परिवारों में पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन नहीं आया है, तथा 23ः परिवारों में पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन आया है। स्पष्ट है कि समय के साथ पारंपरिक मूल्यों में गिरावट देखी जा रही है।

तालिका 10: क्या तकनीकी विकास (मोबाइल/इंटरनेट) ने परिवार को प्रभावित किया है?

क्र.	तकनीकी का प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	86	86ः
2	नहीं	14	141ः
योग		100	100ः

उपरोक्त तालिका क्रमांक 10 से स्पष्ट होता है कि 86ः परिवारों को तकनीकी के प्रभाव ने परिवर्तित किया है, तथा 14ः परिवारों में तकनीकी का प्रभाव नहीं पड़ा है। स्पष्ट है कि परिवारों में आ रहे परिवर्तन के लिए तकनीकी का विकास एक महत्वपूर्ण कारक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि गरियाबंद जिले में परिवार व उनकी भूमिकाओं में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। जिसके लिए आधुनिक शिक्षा, रोजगार, तकनीकी विकास इसके प्रमुख कारक रहे हैं। परिवार में बुजुर्गों की भूमिका कम हो रही है तथा महिलाओं की भूमिका बढ़ रही है, जबकि समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता बढ़ रही है।

सन्दर्भ सूची

1. Srinivas MN. Social change in modern India. University of California Press, 1966, 45–78.
2. Shah AM. The family in India: Critical essays. Orient Longman, 1998, 112–145.
3. Desai IP. Some aspects of family in Mahuva. Asia Publishing House, 1964, 60–92.
4. Ahuja R. Indian society. Rawat Publications, 2016, 210–250.
5. Singh Y. Modernization of Indian tradition. Thomson Press, 1973, 95–130.
6. Kapadia KM. Marriage and family in India. Oxford University Press, 1966, 180–220.
7. Ministry of Health and Family Welfare. National Family Health Survey (NFHS-5) 2019–21. Government of India, 2021, 35–60.
8. Government of Chhattisgarh. Economic survey of Chhattisgarh 2022–23, 2023, 150–180.